DOI: https://doi.org/10.37547/supsci-ojp-04-01S-23 Pages: 172-176

Oriental Journal of Philology

ORIENTAL JOURNAL OF PHILOLOGY

journal homepage:
http://www.supportscience.uz/index.php/ojp/about

तुलनात्मक साहित्य : सिद्धांत एवं प्रयोग

(भारतीय भाषाओं के संदर्भ में)

- आचार्य वी. कृष्ण

(भारतीय भाषाओं के संदर्भ में)

Comparative literature: theory and practice (context: indian languages)

ACHARYA V. KRISHNA
Doctor of Hyderabad University
Republic of India

Abstract: Writers and poets like Russian poet Pushkin, Baron, Dante, Ezra Pound, Matthew Arnold were knowledgeable in many languages. The purpose of saying this is that due to this multi-lingual information, a strong cultural consciousness has arisen in Europe from which it can be said that the seeds of comparative literature have been sown. It is from here that a new emotional picture has arisen in Europe which is known as 'European Mind'. Matthew Arnold says in one place that "A criticism consider Europe as a great confederation of thought and feeling ….. Europe is for all intellectual and spiritual purposes one great confederation" And so Arnold continues 'Every critic should try and possess one great literature at least, besides his own- the more unlike his own the better'. The purpose of comparative literature is clear in the criticism of Matthew Arnold – "the practitioners of comparative literature must make available to their own public, the work of maximum excellence so that there will be available a standard for the local language". Matthew Arnold called Europe 'an Intellectual and Spiritual Federation' while Eliot gave birth to the feeling of 'European mind'. Eliot has written – "a poet should write not merely with his own generation in his bones but with a feeling that the whole of literature of Europe from Homer and within it the literature of his own country has simultaneous

existence and compose a simultaneous order." American poet and critic Archibald MacLeish said an important thing. He said that - 'A poem is a poem in any language'. (Poetry and Experience)

Therefore, there would be no exaggeration in saying that literature is an universal art. If literature is a creative art then it can easily enter any language of the world and can be established as the property of the people of that language. No matter which country in the world, literature belongs to everyone. Literature is indivisible. Literature is united. Firstly: Students of Comparative Literature should understand that Homer, Shakespeare, Chekhov, Valmiki, Rabindranath Tagore etc. are our own. In the modern world it is essential to have comparative literature. In the present society suffering from violence, comparative literature not only performs the function of literature but it also performs the function of a religion. Today's humans should abandon all religions and adopt comparative literary religion so that a new international literary consciousness can develop so that a new human era can begin/

Key words: Chekhov, Intellectual, Tagore, Comparative Literature, Russian, Valmiki, international literary, Shakespeare.

पृष्ठभूमि :

'भूगोल की रक्त वाहिकाएँ हैं – नदियाँ और कवि I कविताओं की तरह प्रवाहित होती हैं नदियाँ – पशुओं के लिए, पक्षियों के लिए, मनुष्यों के लिए I नदियों के सपने फसलों में फलीभूत होते हैं तो कवियों के सपने मनुष्यों में' I नदी की भांति कवि अनेक देशों में, अनेक भाषाओं में, अनेक सभ्यताओं में और अनेक मानवीय सुख-दुखों में प्रवाहित होता है I कवि की इस यात्रा में भाषा पिछड जाती है I भाषा पांच सौ या छ सौ किलोमीटरों से अधिक दूर दौड़ नहीं सकती है I जिस जगह पर थक कर भाषा रुक जाती है उसी जगह से दूसरी भाषा खड़ी होकर दौड़ने लगती है I यह दूरी का अद्भुत तंत्र है I यहाँ से दूसरी मिटटी, दूसरा पेड़, दूसरी नदी, दूसरा आकाश, दूसरा फूल, दूसरा फल, दूसरी पक्षी, दूसरा गीत प्रारंभ होता है I यहीं से ही मनुष्य के सुख-दुःख, मनुष्य की कहानियाँ, मनुष्य के आंसू, मनुष्य के पुराण, मनुष्य का इतिहास यह सब पृथक हो जाते हैं I इसका अर्थ यह नहीं है कि एक जगह आम होता है तो दूसरी जगह नहीं होता है, एक जगह कोयल है तो दूसरी जगह नहीं है, एक जगह आंसू हैं तो दूसरी जगह नहीं हैं I सब यथावत रहते हैं I लेकिन उसके रूप, रंग और गंध में एक ऐसी विशेषता छिपी रहती है जो अनिर्वचनीय होती है I अर्थात वह वसुओं की भिन्नता नहीं है. वास्तव में वह वस्तुओं की विशेषता है I 'वह सब एक पृथक जीवन के आग का ढेर है' I उस पूरे आग के ढेर को उठा लाता है इस मिटटी में जन्मे अलंकार I उस अलंकार को और उस अलंकार द्वारा संकेतित साहित्य को प्राप्त करने का उद्देश्य यह हुआ कि उस जनता के जीवन सार को हमने अपने जीवन-सार के साथ सम्मिलित कर लिया है I इस तरह जितने साहित्यों को हम प्राप्त करते हैं उतनी ही मानवीय अनुभूतियाँ और उनकी विशेषताएँ, काल, दूरियाँ अपने अधीन हो जाती हैं, आत्मगत हो जाती हैं और चेतना के क्षितिज विस्तृत हो जाते हैं I मात्र एक अलंकार इतना बड़ा कार्य करता है I इसलिए प्रमुख कवि

एवं आलोचक आर्चबाल्ड मेक्लिश ने कहा 'यदि एक रूपक मर जाता है तो पूरी सभ्यता मर जाती है'। **('If a metaphor dies a whole civilization dies.')**I दार्शन से युक्त इस वाक्य के आलोक में यह समझने की कोशिश होगी कि तुलनात्मक साहित्य किसे कहते हैं?

तुलनात्मक साहित्य : सैद्धांतिकी

समय और दूरियों के चमत्कार से इंसान बच नहीं सकता है I कहा जाता है कि एक ही अंग्रेजी भाषा को अटलांटिक समुन्दर ने दो भाषाओं में बदल दिया है I वाल्लास स्टेवेंस कहते हैं "अमेरिकी संवेदनशीलता में ब्रिटिश नहीं हैं और न ही वे यूरोपीय हैं" **("Americans are not British in sensibility nor are they European")**l समय और दूरी पर जीत हासिल करने के लिए तुलनात्मक साहित्य एक अद्भुत अस्त्र है. तुलनात्मक साहित्य का अर्थ है एक से अधिक भाषा साहित्यों को जोड़ कर विश्लेषण करने की आलोचना विधि. पाठक अन्य भाषाओं के साहित्यों को स्रोत भाषाओं या अनुवादों के द्वारा पढ़ कर तुलनात्मक फलस्वरूप विशिष्ट अनुभव प्राप्त करते हैं. तुलनात्मक साहित्य इस विशिष्ट अनुभव को आलोचना के रूप में उपलब्ध कराता है. जीवन की भिन्न-भिन्न घटनाओं, विभिन्न मानवीय भावात्मक परिस्थितियों तथा अन्य देशों के जन-वन-नदी-पर्वत आदि, प्राकृतिक वस्तु, स्थान प्रभाव आदि संवेदनात्मक बंधन, इतिहास, आन्दोलन, युद्ध आदि घटनाओं की छाप जैसे स्थूल विषय, साहित्यिक विधाएँ, अलंकार,बिम्ब, प्रतीक आदि के विशेष गुण , संगीत जैसी मृदुल कलाएँ और उनका अपनी जमीन, हवा, वन-नदी-पर्वत आदि से रिश्ता आदि तुलनात्मक साहित्य में विश्लेषित होंगे.

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि तुलनात्मक साहित्य के लिए स्वतन्त्र एवं मौलिक रचनाएँ योग्य होंगी. जैसे सृष्टि में पेड़, पहाड़, नदी, मृग, मनुष्य और भाषाएँ सहज जन्म लेती हैं वैसे ही रचनाएँ भी सहज होनी चाहिए. तभी तुलनात्मक साहित्य का लक्ष्य पूरा होता है. तुलनात्मक साहित्य द्वारा मुख्यतः यह स्थापित होगा कि इस भूगोल पर इंसान चाहे जहां भी रहे उनके भावात्मक घटनाएँ, सुख दुःख, सामाजिक स्थितियाँ, इतिहास व् पुराण और मानवीय जन्य सन्दर्भों में भले ही भिन्नताएँ हों लेकिन सामान्यतः समान होंगे. यह सब उन समानताओं और भिन्नताओं को खोजने और आविष्कृत करने की दृष्टि पर निर्भर रहता है. साहित्य का आनंद और ज्ञान की सफलता प्राप्त करना यही तुलनात्मक साहित्य का प्रयोजन है. अपनी स्व-भाषा के मोह में छोटा अणु भी पर्वत-सा प्रतीत होता है:

'मक्खियों के साम्राज्य में डिक्टेटर बनते हैं मच्छर,
ऊंट के सौन्दर्य का बखान करते हैं गधे,
यहाँ रेंगती चींटियाँ हिमालय की श्रेणियां हैं.' (आधुनिक महाभारत)

कुँएँ में तैरते हुए मेंढक यह सोचता कि वह महा सागर लांघ रहा है. अपनी भाषा के व्यामोह के शिकार व्यक्ति भी मेंढक की तरह ही सोचता है. इस अल्प सोच में से बाहर आना जरूरी है. इस सन्दर्भ में दवा की तरह तुलनात्मक साहित्य मदत करता है. दरअसल, अन्य भाषा के साहित्यों के अध्ययन से अपनी भाषा के लेखकों के स्तर को समझा जा सकता है और इस गलतफहमी को दूर किया जा सकता है कि अपनी भाषा के लेखक ही महान है. ऐसी संकीर्ण की सोच से बाहर आ सकता है कि जो यह मानता है कि अपना ही साहित्य श्रेष्ठ है और वाही संपूर्ण स्वर्ग है. कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति जानता है कि कोई एक भाषा का साहित्य समग्र नहीं होता है. हर भाषा की अपनी

संस्कृति होती है, अपना इतिहास होता है और उनकी अपनी अनुभूतियाँ होती हैंI विश्व साहित्य का इतिहास प्रमाण है कि कोई एक भाषा के साहित्य में कोई एक विधा प्रसिद्ध होती है.

भारतीय भाषाएँ : तुलनात्मक साहित्य

यह एक स्थापित तथ्य है कि प्राचीन पाश्चात्य देशों में कोई ऐसे सन्दर्भ उपलब्ध नहीं होते हैं जिसमे साहित्य का अवलोकन एक सिद्धांत के रूप में तुलनात्मक दृष्टि से किया गया हो. पाश्चात्य देशों में आज जो स्थिति तुलनात्मक साहित्य को लेकर दिखाई देती है वह भारत में प्राचीन काव्यशास्त्र में एक हिस्से के रूप में लक्षित होता है. पंडित दण्डी, वामन और राजशेखर आदि के काव्य ग्रंथों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक दृष्टि न केवल एक हिस्से के रूप में थी बल्कि वह सभी दृष्टियों से एक सिद्धांत के रूप में शीर्ष स्थान पर थी. भारतीय काव्यशास्त्र में तुलनात्मक साहित्यिक दृष्टि शीर्षस्थ रहने के पीछे कारण संस्कृत साहित्य है. लेकिन संस्कृत साहित्य एक भाषा से संबंधित साहित्य नहीं है. बंगला, तेलुगु, तमिल, गुजराती भाषाओं के साहित्य जैसा नहीं. देश की अनेक भाषाओं का मिश्रित रूप है संस्कृत साहित्य. इन भाषाओं का प्रयोग भी सृजनात्मक साहित्यिक प्रक्रिया में हुआ है. यह एक अद्भुत स्थिति है. ऐसी स्थिति विश्व के किसी और भाषा के साहित्य मके साथ नहीं है. उदाहरण के लिए कालिदास कृत शाकुंतलम में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग हुआ है. शाकुंतला की भाषा प्राकृत है. केवल शाकुंतला की बात नहीं है सभी स्त्री पात्र प्राकृत ही बोलती है. दुष्यंत संस्कृत बोलते हैं. वैसे सभी पुरुशु पात्र संस्कृत बोलते हैं. ऐसे अनेक नाटक हैं जिनमे एक से अधिक प्राकृत भाषाएँ जैसे शौरसेनी, मागही, अवंतिका, अर्धमागही आदि प्रयुक्त हुई हैं. शूद्रक के 'मृच्छकटिक' नाटक में तो सात आठ भाषाएँ प्राप्त होती हैं. इस तरह एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग होने से साहित्य का तुलनात्मक अवलोकन व परिशीलन सहजहो जाता है. अतः कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय साहित्य में विविध भाषाओं के प्रयोग के चलते तुलनात्मक साहित्यानुशीलन सहज है.

आधुनिक समय :

हर युग में कहीं न कहीं मनुष्य की चेतना का विस्फोट जरूर होता है. इस विस्फोटन में मनुष्य की भौतिक-बौद्धिक चेतना का प्रभाव झलकता है जिससे ज्ञान के नये नेत्र खुलने लगते है. ऐसा हर युग में हुआ है और होगा भी. आधुनिक समय में योरोप में ऐसा ही विस्फोटन हुआ था. विज्ञान, राजनीति, साहित्य आदि खेत्रों में पुराने की जगह नया घटित हुआ है. योरोप में घटित इस नए को तुलनात्मक साहित्य के रूप में देखा जा सकता है. ओपनिवेशिक शासन काल में अंग्रेजी भाषा के द्वारा जो साहित्यिक संस्कृति भारत को प्राप्त हुई है उससे तुलनात्मक साहित्य की भावना को अपनाने में सुविधा है. आज योरोप में भाषाई भिन्नता के बावजूद सांस्कृतिक एकता बरखरार है. योरोपीय लेखक मुख्यतः ग्रीक और लाटिन के लेखक संस्कृति प्रेरित उत्साह से अन्य भाषाओं के साहित्यों का अध्ययन करते है.

रूसी कवि पुश्किन, बैरन, दांते, एजरा पाउंड, मैथ्यू अर्नाल्ड जैसे लेखक एवं कवि कई भाषाओं के जानकार थे. कहने का उद्देश्य यह है कि इस बहु भाषा जानकारी के कारण योरोप में एक दृढ़ संस्कृतिक चेतना पैदा हुई है. जिससे कहा जा सकता है कि तुलनात्मक साहित्य के बीज बोये गए हैं. यहीं से योरोप में एक नया भाव चित्र पैदा हुआ है जिसे 'योरोपियन दिमाग' (European Mind) के नाम से जाना जाता है. मैथ्यू अर्नाल्ड कहते हैं एक जगह "एक आलोचक यूरोप को विचार और भावना का एक महा संघ मानता है... यूरोप सभी बौद्धिक और आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए एक महा संघ है"('A criticism consider Europe as a great

confederation of thought and feeling ….. Europe is for all intellectual and spiritual purposes one great confederation') और इसलिए अर्नाल्ड आगे कहते हैं - "प्रत्येक आलोचक को अपने स्वयं के अलावा कम से कम एक महान साहित्य प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए - जितना अधिक वह अपने से भिन्न होगा उतना ही बेहतर होगा। ('Every critic should try and possess one great literature at least, besides his own- the more unlike his own the better') मैथ्यू अर्नाल्ड की आलोचना में तुलनात्मक साहित्य का प्रयोजन स्पष्ट होता है – "तुलनात्मक साहित्य के अभ्यासकर्ताओं को अपनी जनता के लिए अधिकतम उत्कृष्टता का कार्य उपलब्ध कराना चाहिए ताकि स्थानीय भाषा के लिए एक मानक उपलब्ध हो सके।" (the practitioners comparative literature must make available to their own public, the work of maximum excellence so that there will be available a standard for the local language.) मैथ्यू अर्नाल्ड ने योरोप को 'एक बौद्धिक और अध्यात्मिक महासंघ' कहा तो इलियट ने 'योरोपीय दिमाग' की भावना को जन्म दिया है. इलियट ने लिखा है – "एक कवि को न केवल अपनी पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए लिखना चाहिए, बल्कि इस भावना के साथ लिखना चाहिए कि होमर से लेकर यूरोप के संपूर्ण साहित्य और उसके भीतर उसके अपने देश के साहित्य का एक साथ अस्तित्व है और एक क्रम का लेखन करना चाहिए।"("a poet should write not merely with his own generation in his bones but with a feeling that the whole of literature of Europe from Homer and within it the literature of his own country has simultaneous existence and compose a simultaneous order.)' अमेरिकी कवि एवं आलोचक आर्चीबाल्ड मेक्लिश ने एक महत्वपूर्ण बात कही. उनहोंने कहा कि - 'कविता किसी भी भाषा में कविता ही होती है'('A poem is a poem in any language')(Poetry and Experience).

अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि साहित्य विश्वजनीन कला है. यदि साहित्य सृजनात्मक कला है तो विश्व की किसी भी भाषा में अनायास ही वह प्रवेश कर सकता है और उस भाषा की जनता की संपत्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो सकता है. विश्व में चाहे साहित्य किसी भी देश का क्यों न वह सबका होता है. साहित्य अविभाज्य होता है. साहित्य एक्य होता है. प्रथमथः तुलनात्मक साहित्य के अध्येताओं में यह समझ होनी चाहिए कि होमर, शेक्सपियर, चेखोव, वाल्मीकि, रविन्द्रनाथ ठागूर आदि को अपने ही हैं. आधुनिक विश्व में त्तुलानात्मक साहित्य का होना अनिवार्य है. हिंसा से पीड़ित वर्तमान समाज में तुलनात्मक साहित्य केवल साहित्य का काम नहीं करता है वरन वह एक धर्म का काम भी करता है. आज का मानव सभी धर्मों को त्याग दें और तुलनात्मक साहित्यिक धर्म को अपनावें जिससे एक नया अन्तराष्ट्रीय साहित्यिक चेतना का विकास हो ताकि नए मानव युग का आरम्भा हो सके.

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. काल रेखा (तेलुगु) – जी एस शर्मा
2. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका –इन्द्रनाथ चौधरी
3. तुलानात्मक साहित्य – डा नागेन्द्र
4. तुलनात्मक साहित्यं – डा वेंकटराव
5. Comparative perspectives on Indian Literature